ध्रुपद मेले की राष्ट्रीय व्यापकता एवं गायक और वादकों की राष्ट्र स्तरीय स्थापना

डॉ0 सियाराम

21 फरवरी 1975 को जब ध्रुपद मेले के उद्घाटन के समय ध्रुपद ज्योति ध्रुपद कलश प्रज्जवलित हुई तो मानों पूरा वातावरण में ध्रुपद शैली की लुप्त हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करने की दिशा का संकेत हो गया। ध्रुपद कलश पर ध्रुपद ज्योति जलते ही कार्यक्रम की शुरूआत तो हो गयी किन्तु उसके पूर्व इस महाप्रयास में लगे हुए कलाकारों को काफी उतार–चढ़ाव भरा संघर्ष करना पड़ा था।

जहाँ तक ध्रुपद शैली में गायकों और वादकों की राष्ट्रीय स्तर पर स्थापना की बात है तो जब मेला इतना व्यापक स्तर पर इतना महत्वपूर्ण अपना स्थान रख रहा हो तो निश्चित ही इसमें भाग लेने वाले कलाकार वे चाहे गायक हों या वादक से सम्बन्धित किसी भी क्षेत्र के हो सुरबहार, वीणा, पखावज, सरोद आदि से सम्बन्धित कलाकार उनकी स्थापना स्वयं राष्ट्रीय स्तर पर हो जाती है। काशी के ध्रुपद मेला में कुछ कलाकार भाग लेकर अपनी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बताकर अपना लाभ भी प्राप्त करते हैं क्योंकि यह मेला अपना अन्तर्राष्ट्रीय महत्व स्थापित कर चुका है। यहाँ की सी0डी0 विदेशों में बड़े पैमाने पर बिकती है। उसकी बड़ी मांग है, विदेशी आकर रात भर बैठे रहते हैं और कलाकार का पूरा कार्यक्रम रिकार्ड भी करते हैं। आज इसका राष्ट्रीय स्तर पर व्यापकता का ही परिणाम है कि इसके अन्तर्गत जो भी कलाकार अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करता है, उसकी राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं पहचान बन जाती है।